Early roman and Greek view of abnormality

ग्रीक चिकित्सा मंदिरों ने एथेनियाई नेता पेरिक्लीज़ (461–429 ईसा पूर्व) के अधीन ग्रीस के स्वर्ण युग की शुरुआत की। इस अवधि के दौरान मानसिक विकारों की समझ और उपचार में उल्लेखनीय प्रगति हुई, हालांकि उस समय के ग्रीक लोग मानव शरीर को पवित्र मानते थे, जिसके कारण मानव शरीर रचना या शरीर विज्ञान के बारे में बहुत कम जाना जा सका।

इसी समय ग्रीक चिकित्सक हिप्पोक्रेट्स (460–377 ईसा पूर्व), जिन्हें आधुनिक चिकित्सा का जनक कहा जाता है, ने अपना प्रशिक्षण प्राप्त किया और इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

हिप्पोक्रेट्स ने इस धारणा को खारिज कर दिया कि देवता और राक्षस बीमारियों के विकास में हस्तक्षेप करते हैं। इसके बजाय, उन्होंने यह जोर दिया कि मानसिक विकार, अन्य बीमारियों की तरह, प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न होते हैं और इनके लिए उपयुक्त उपचार मौजूद हैं। उन्होंने यह भी माना कि मस्तिष्क बौद्धिक गतिविधि का केंद्रीय अंग है और मानसिक विकार मस्तिष्क विकृति (ब्रेन पैथोलॉजी) के कारण होते हैं।

इसके अलावा, हिप्पोक्रेट्स ने अनुवांशिकता (जेनेटिक्स) और पूर्ववृत्ति (प्रेडिस्पोज़िशन) के महत्व को भी रेखांकित किया। उन्होंने यह भी बताया कि सिर में चोट लगने से संवेदी (सेंसरी) और मोटर (गति-संबंधी) विकार हो सकते हैं।

हिप्पोक्रेट्स ने सभी मानसिक विकारों को तीन सामान्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया—मेनिया (उन्माद), मेलेंकोलिया (अवसाद), और फ़्रेनाइटिस (मस्तिष्क ज्वर)। उन्होंने प्रत्येक श्रेणी में शामिल विशिष्ट विकारों का विस्तृत नैदानिक (क्लिनिकल) विवरण प्रदान किया।

उन्होंने मुख्य रूप से नैदानिक अवलोकन (क्लिनिकल ऑब्जर्वेशन) पर भरोसा किया, और उनके विवरण, जो उनके रोगियों के दैनिक नैदानिक अभिलेखों (डेली क्लिनिकल रिकॉर्ड्स) पर आधारित थे, आश्चर्यजनक रूप से व्यापक और विस्तृत थे।

महेर और महेर (1994) ने यह बताया कि व्यक्तित्व या स्वभाव की व्याख्या करने वाले प्रारंभिक प्रतिमानों (पैराडाइम्स) में सबसे प्रसिद्ध सिद्धांत चार रसों (Four Humors) का सिद्धांत है, जो पहले हिप्पोक्रेट्स और बाद में रोमन चिकित्सक गैलेन से जुड़ा हुआ था।

भौतिक संसार के चार मूल तत्व माने जाते थे—पृथ्वी, वायु, अग्नि और जल, जिनके गुण थे—ऊष्णता (गर्मी), शीतलता (ठंडक), आर्द्रता (नमी) और शुष्कता (रूखापन)। इन तत्वों के संयोजन से शरीर के चार आवश्यक रस (शारीरिक द्रव) बनते थे—रक्त (सैंगुइस), बलगम (फ्लेम), पित्त (कोलर), और काला पित्त (मेलेंकोलिक)।

इन रसों का विभिन्न व्यक्तियों में अलग-अलग अनुपात में मिश्रण होता था, और व्यक्ति के स्वभाव (टेंपरामेंट) को निर्धारित करने में प्रमुख भूमिका निभाता था कि इनमें से कौन-सा रस प्रधान है।

हिप्पोक्रेट्स द्वारा प्रस्तुत मानव व्यवहार की सबसे प्रारंभिक और दीर्घकालिक प्रकार्यात्मकता (टाइपोलॉजी) में से एक थी: सैंग्विन (संगीन), फ्लेग्मेटिक (शांत), कोलेरिक (उत्तेजित), और मेलन्कोलिक (उदासीन)। इनमें से प्रत्येक "प्रकार" के साथ कुछ विशिष्ट व्यक्तित्व गुण जुड़े हुए थे। उदाहरण के लिए, सैंग्विन प्रवृत्ति वाले व्यक्ति को आशावादी, हंसमुख और निर्भीक माना जाता था।

हिप्पोक्रेट्स ने सपनों को रोगी के व्यक्तित्व को समझने में महत्वपूर्ण माना। इस दृष्टिकोण से, वे आधुनिक मनोविश्लेषणात्मक मनोचिकित्सा (psychodynamic psychotherapy) की एक मूलभूत अवधारणा के अग्रदूत थे।

हिप्पोक्रेट्स द्वारा सुझाए गए उपचार तत्कालीन प्रचलित भूत-प्रेत भगाने की विधियों (exorcism) से कहीं अधिक उन्नत थे। उदाहरण के लिए, उन्होंने मेलन्कोलिया (अवसाद) के उपचार के लिए एक नियमित और शांतिपूर्ण जीवन, संयम और परहेज की सलाह दी।

उन्होंने पर्यावरण के महत्व को भी पहचाना और अक्सर अपने रोगियों को उनके परिवारों से अलग कर दिया।

हिप्पोक्रेट्स द्वारा रोगों के प्राकृतिक कारणों, नैदानिक अवलोकन (clinical observation) और मानसिक विकारों के मूल में मस्तिष्क रोगविज्ञान (brain pathology) पर दिया गया जोर वास्तव में क्रांतिकारी था। हालांकि, अपने समकालीनों की तरह, उन्हें शरीर विज्ञान (physiology) का सीमित ज्ञान था।

उन्होंने माना कि हिस्टीरिया (हिस्टीरिया: जैविक कारणों के बिना शारीरिक बीमारी के लक्षण प्रकट होना) केवल महिलाओं में पाया जाता है और इसका कारण गर्भाशय (uterus) का शरीर के विभिन्न भागों में भटकना और संतान प्राप्ति की लालसा होना है। इस "रोग" के लिए, हिप्पोक्रेट्स ने विवाह को सर्वोत्तम उपचार बताया।

प्रसिद्ध ग्रीक दार्शनिक अरस्तू (384–322 ईसा पूर्व), जो प्लेटो के शिष्य थे, ने मानसिक विकारों पर विस्तृत रूप से लिखा। मानसिक विकारों पर उनके सबसे स्थायी योगदानों में से एक उनके चेतना (consciousness) का वर्णन है। उनका मानना था कि "सोचने" की दिशा से दर्द को समाप्त किया जा सकता है और सुख प्राप्त किया जा सकता है। मानसिक विकारों के बारे में यह सवाल कि क्या उन्हें मानसिक कारणों जैसे निराशा और संघर्ष से उत्पन्न किया जा सकता है, अरस्तू ने इस संभावना पर चर्चा की और इसे अस्वीकार कर दिया; इस विषय पर उनका मार्गदर्शन व्यापक रूप से अनुसरण किया गया।

अरस्तू ने सामान्यतः हिप्पोक्रेट्स के पित्त (bile) में उत्पन्न विकारों के सिद्धांत को माना। उदाहरण के लिए, उन्होंने माना कि बहुत गर्म पित्त प्रेमी भावनाएँ, शब्दों की प्रवृत्ति और आत्महत्या की प्रवृत्तियों को उत्पन्न करता है।

हिप्पोक्रेट्स के कार्य को कुछ बाद के ग्रीक और रोमन चिकित्सकों ने जारी रखा। विशेष रूप से अलेक्जेंड्रिया, मिस्र (जो 332 ईसा पूर्व में अलेक्जेंडर द ग्रेट द्वारा स्थापित होने के बाद ग्रीक संस्कृति का केंद्र बन गया) में, चिकित्सा प्रथाएँ उच्च स्तर तक विकसित हुईं, और सैटर्न को समर्पित मंदिर पहले दर्जे के स्वास्थ्य आश्रम (sanatoria) बन गए। मानसिक रोगियों के लिए सुखद वातावरण को बहुत महत्वपूर्ण चिकित्सीय मूल्य माना जाता था, जिन्हें लगातार गतिविधियों में शामिल किया जाता था, जैसे पार्टियाँ, नृत्य, मंदिर के बागों में सैर, नील नदी पर नौका विहार, और संगीत कार्यक्रम। इस समय के चिकित्सक विभिन्न चिकित्सीय उपायों का

उपयोग करते थे, जिनमें आहार, मालिश, जल चिकित्सा, व्यायाम, और शिक्षा शामिल थीं, साथ ही कुछ कम इच्छित प्रथाएँ जैसे खून निकालना, शुद्धिकरण, और यांत्रिक प्रतिबंध भी।

अस्सक्लेपियादेस (लगभग 124–40 ईसा पूर्व) एक ग्रीक चिकित्सक थे, जो एशिया माइनर के बिथिनिया में प्रुसा में पैदा हुए थे और दूसरी शताबदी ईसा पूर्व के अंत में रोम में चिकित्सा का अभ्यास करते थे। उन्होंने रोगों का एक सिद्धांत विकसित किया जो शरीर के छिद्रों के माध्यम से परमाणुओं के प्रवाह पर आधारित था, और शरीर को ठीक करने के लिए उपचारों का प्रस्ताव किया, जैसे मालिश, विशेष आहार, स्नान, व्यायाम, संगीत सुनना, और विश्राम और शांति (स्टोन, 1937)।

ग्रीस के सबसे प्रभावशाली चिकित्सकों में से एक गैलन (ईस्वी 130–200) थे, जिन्होंने रोम में चिकित्सा का अभ्यास किया। हालांकि उन्होंने हिप्पोक्रेटिक परंपरा पर विस्तार से चर्चा की, उन्होंने मानसिक विकारों के उपचार या नैदानिक वर्णनों में ज्यादा कुछ नया योगदान नहीं दिया। बल्कि, उन्होंने तंत्रिका तंत्र की शारीरिक रचना के बारे में कई मौलिक योगदान दिए। (यह निष्कर्ष पशुओं के शवविच्छेदन पर आधारित थे; मानव शव परीक्षण की अनुमति नहीं थी।) गैलन ने इस क्षेत्र में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया, और मानसिक विकारों के कारणों को शारीरिक और मानसिक श्रेणियों में विभाजित किया। जिन कारणों का उन्होंने उल्लेख किया उनमें सिर में चोट, शराब का अत्यधिक उपयोग, सदमा, डर, किशोरावस्था, मासिक परिवर्तन, आर्थिक उलटफेर, और प्रेम में निराशा शामिल थे।

रोमानी चिकित्सा ने रोमन लोगों की विशेष प्रैक्टिकल सोच को दर्शाया। रोम के चिकित्सक अपने मरीजों को आरामदायक बनाना चाहते थे और इसलिए उन्होंने सुखद शारीरिक उपचारों का उपयोग किया, जैसे गर्म स्नान और मालिश। उन्होंने "विपरीत द्वारा विपरीत" (contrariis contrarius) के सिद्धांत का पालन भी किया, उदाहरण के लिए, उन्होंने अपने मरीजों को गर्म स्नान में बैठने के दौरान ठंडा शराब पीने के लिए कहा।